मनोज
चित्र कथा
रु 4.00
भटकती आत्मा
डबल सीक्रेट एजेन्ट 00½
राम-रहीम
मनोज
कॉमिक्स

भटकती आत्मा
राम-रहीम
लेखक-बिमल चटर्जी
चित्रांकन-त्रिशूल कॉमिक्स आर्ट
शहर की भीड़-भाड़ से बहुत दूर, उस वीराने में खड़े वे खण्डहर जैसे अब भी चीख-चीखकर कह रहे थे कि वहां किसी समय एक विशाल और आलीशान हवेली थी, जिसे वक्त के थपेड़ों ने इस अवस्था में पहुंचा दिया है। रात के समय वे खण्डहर और उसके आस-पास का माहौल बहुत ही भयानक लगने लगता था, जिसके कारण लोग-बाग भूले से भी वहां आने का साहस नहीं करते थे।
हवेली के उन खण्डहरों से एक सड़क सीधी जाकर एक चौराहे से मिल गई थी और उसी चौराहे से एक सड़क बाईं ओर घूमकर सीधी शहर तक चली गई थी। दूसरी शहर से बाहर चली जाती थी और तीसरी एयरपोर्ट की ओर।

रंगी

10,0

इनके अलावा

मूर्खाधिराज अकड़-भगड़

सपना • क़िस्मत का धनी • घुड़वाली

डर • भटकती आत्मा •

प्रतिशोध की ज्वाला • नाग

• सोने का मट

भाग कैसे लें?

1. आपको उपरोक्त सोलह चित्रकथायें, जो प्रथम सप्ताह के सैट में प्रकाशित हो रही हैं अपनी पसन्द अनुसार क्रम देना है।
2. मनोज चित्रकथा के बारे में नीचे दिये गये अधिकतम आठ शब्दों में पूरा कीजिए।
मनोज चित्रकथा पढ़कर ऐसा लगा ....

अब अपना प्रवेश पत्र मनोज चित्रकथा के कवर कटिंग्स के साथ निम्न पते पर भेजिए।
मनोज कॉमिक्स प्रतियोगिता
अग्रवाल मार्ग, शक्ति नगर,
110 007

क्रम हमारे द्वारा निर्धारित क्रम से मेल खायेगा
वाक्य सर्वप्रथम, द्वितीय व तृतीय माना जायेगा
प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार दिया जायेगा।

प्रवेश-पत्र के साथ मनोज चित्रकथा के कवर की कटिंग्स भेजनी होंगी।

6 मनोज
सदस्यों
प्रतियोगि
7 पन्द्रह म

ओह! उस लड़की की जान खतरे में है! कार सवार शायद उसे कुचलने का इरादा रखता है!
और इससे पहले कि कार युवती को कुचल पाती
आह!
के प्राण तो बचे गये, लेकिन जैसे ही कार नोट करने के लिये रहीम ने पलटकर की ओर देखा, कार दूर तक कहीं पता
आश्चर्य है! इतनी जल्दी वह कार कहां गायब हो गई?
आप कौन हैं, इतनी रात गये यहां इस वीराने में क्या कर रही हैं, कहां रहती हैं आप और वह बदमाश कौन था और आपको क्यों मारना चाहता था?
और
ने कोई उत्तर नहीं दिया! सूनी आंखों से रहीम को घूरती रही, जैसे वह उसे का प्रयत्न कर रही हो!
यह रह टुकुर-टुकुर मेरी ओर क्या देख रही हैं? आप बोलती नहीं, कौन हैं आप और कहां रहती हैं?
तुम... तुम कुन्दन ही हो न? मेरे छोटे भाई
कुन्दन! छोटा भाई!
आपको गलतफहमी हो रही है मैडम! मेरा नाम कुन्दन नहीं, बल्कि रहीम है और मैंने आज से पहले कभी आपको नहीं देखा!

तुम मेरे भाई कुन्दन ही हो और मैं तुम्हारे ही यहां आने का एक शताब्दी से इन्तजार कर रही थी।
एक शताब्दी से! अरे बापरे! यह मैं फिर किस मुसीबत में फंस गया। जरूर यह लड़की या तो पागल है या फिर मुझे मूर्ख बनाने की कोशिश कर रही है!
सुनो मैडम, मुझे मूर्ख बनाने की चेष्टा मत करो। उम्र से तुम सत्रह-अट्ठारह वर्ष से अधिक की नहीं लगती, फिर एक शताब्दी से अपने भाई का इंतजार करने का मतलब?
यह तुम नहीं समझ पाओगे भइया। वैसे विश्वास करो, मैं जो कुछ कह रही हूं वह सच है।
बिल्कुल नहीं, मैं तुम्हारी बातों पर जरा भी विश्वास नहीं कर सकता। सच-सच बताओ, तुम कौन हो और यह सब क्या नाटक है?
मैं जानती थी। तुम मिलने पर ऐसा ही कहोगे, क्योंकि पिछले जन्म की तमाम बातें तुम भूल चुके हो, परन्तु मुझे आज भी सब कुछ याद है।
पिछला जन्म! क्या बकवास है? तुम मुझे फिर मूर्ख बनाने लगी!
ऐसी बात नहीं भइया! घर फिर मैं तुम्हें सबकुछ और याद दिलाऊंगी
घर! कहां है तुम्हारा घर? और हां, तुम्हारा नाम तो मैंने पूछा ही नहीं!
मेरा नाम कामनी है और मैं पास ही एक हवेली में रहती हूं। आओ चलें।

कुछ सोचकर रहीम उसके साथ चल पड़ा।
या तो यह लड़की वास्तव में पागल है या फिर अत्यन्त ही चालाक! भोली-भाली बनने का काफी सजीव अभिनय कर रही है। पता नहीं मुझसे क्या चाहती है? खैर, अभी पता चल जायेगा!
शीघ्र ही-
मैं इसी हवेली में रहती हूं।
हुम्म! तुम्हारे साथ और कौन-कौन रहता है यहां?
कोई नहीं, यहां मैं अकेली ही रहती हूं। हां, एक वफादार नौकर और रहता है मेरे साथ।
ओह! इतनी बड़ी हवेली में अकेले रहना भी एक आश्चर्य की बात है, लेकिन तुम्हारे माता-पिता का क्या हुआ?
युवती ने, जिसने कि रहीम को अपना नाम कामली बताया था, कुछ कहने के लिये अपना मुंह खोला ही था कि दूर किसी घड़ियाल का घण्टा बज उठा!
टन-टन-टन-टन
ओह! चार बज गये!
और अचानक ही कामनी अत्यन्त ही व्याकुल दिखाई देने लगी।
क्यों, क्या हुआ? यह तुम अचानक ही परेशान क्यों हो गई?
बस भइया, अब मैं तुम्हारे साथ और ज्यादा देर नहीं ठहर सकती। यदि अपनी बहन का दुःख-दर्द जानना चाहते हो तो कल रात बारह बजे आना। अब मैं जा रही हूं।
ऐ-ऐ रुको!

स्कूटर के जाने के बाद—
यानी वह भूतिया हवेली है! लेकिन वह लड़की ? क्या वह भी कोई भूतनी थी, जो वास्तव में ही एक शताब्दी से अपने भाई कुन्दन का इन्तजार कर रही है ? लेकिन नहीं, मैं भूत-प्रेतों के अस्तित्व पर बिल्कुल भी विश्वास नहीं करता!
मोटर साइकिल में पेट्रोल भरने के पश्चात् उस पर सवार होकर रहीम सर्वप्रथम उसी हवेली के पास पहुंचा।
आश्चर्य है, यह तो कोई पुराना खण्डहर है, जबकि कल रात यह हवेली सही हालत में थी। भीतर प्रकाश भी हो रहा था!
तभी उसकी दृष्टि पास ही खड़े किसी योद्धा के बुत पर पड़ी।
अरे! कल रात जिस व्यक्ति ने मुझे भीतर जाने से रोका था, उसकी शक्ल तो इस बुत से काफी हद तक मिलती-जुलती है, लेकिन वह कहां गया, अब तो दिखाई नहीं दे
आश्चर्य में डूबा रहीम कुछ सोचकर हवेली के भीतर प्रविष्ट हुआ।
निःसन्देह, यहां की अवस्था को देखकर तो यही लगता है कि एक शताब्दी से यहां कोई नहीं रहता होगा!
रहीम ने हवेली का चप्पा-चप्पा छान मारा—
कमाल है! कोई भी नहीं है यहां पर! तो क्या स्कूटर ड्राइवर का कहना सही है कि यह हवेली भूतिया है और कल रात मिली वह युवती वास्तव में कोई भटकती हुई रूह ही थी!

खबरदार! तुम भीतर नहीं जा सकते! भलाई इसी में है कि वापस लौट जाओ।
ओह! क... कौन हो तुम?
प्रश्न नहीं! चुपचाप वापस लौट जाओ, वरना सुबह लोगों को तुम्हारी सिर कटी लाश ही यहां मिलेगी!
इस समय इससे उलझना बेकार ही होगा! सुबह देखूंगा!
ठीक है भाई, तलवार गर्दन से हटाओ! मैं वापस लौट जाता हूं।
समझदार हो!
योद्धा ने तलवार रहीम की गर्दन से हटा ली और वह चुपचाप वहां से लौट पड़ा!
शायद वह योद्धा टाईप नौजवान, कामनी का ही कथित वफादार नौकर होगा! खैर, सुबह समझूंगा उससे भी!
दूसरे दिन सुबह रहीम ने एक पेट्रोल पम्प से एक डिब्बे में पेट्रोल लिया और एक थ्री-व्हीलर में बैठकर उसी जगह पर पहुंचा, जहां उसने मोटर साइकिल छोड़ी थी।
लो भाई, यह किराया संभालो!
ठीक है साहब। पर एक बात कहना चाहता हूं। आप यहां अधिक देर न रुकें।
क्यों?
वह जो खण्डहरनुमा हवेली दिखाई दे रही है ना साहब, उसी के कारण। लोगों का कहना है कि वहां भूतों का वास है!
ओह!
कल रात की घटना को छुपाते हुए रहीम बोला
ठीक है, मैं अभी मोटर साईकिल में पैट्रोल डालते ही यहां से चल दूंगा।
अच्छा साहब, अब मैं चलता हूं।

फिर ना-ना प्रकार के विचारों में डूबा रहीम मोटर साइकिल पर सवार हो वापस लौट पड़ा।
यदि भूत-प्रेतों का कोई अस्तित्व नहीं तो फिर यह सब क्या चक्कर हो सकता है। खण्डहर हवेली बन जाए, मूर्ति इंसान में बदल जाये और एक युवती एक शताब्दी से उन खण्डहरों में वास कर रही हो...
...कहीं ऐसा तो नहीं कि यह सब किसी ऐसे अपराधी का फैलाया हुआ जाल हो, जो सम्मोहन शक्ति का ज्ञाता हो और उसी ने इस युवती के माध्यम से मुझे सम्मोहित करके कल रात वाला नजारा दिखाया हो...
...लेकिन प्रश्न फिर यह उत्पन्न होता है कि इस तरह मुझे सम्मोहित करके वह अपराधी चाहता क्या है? वह मुझे उस युवती का भाई कुन्दन क्यों बनाना चाहता है?
सागर
लेकिन रहीम के पास स्वयं अपने ही प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं था। घर पहुंचकर उसने हल्का-सा भोजन किया, फिर आराम करने के लिए बिस्तर पर लेट गया। परन्तु न तो उसे नींद ही आई और न ही उसका किसी काम में ही दिल लगा। बस हवेली और उस युवती का चेहरा ही उसकी आंखों के सामने घूमता रहा और इसी तरह धीरे-धीरे शाम हो आई।
कौन हो सकती है वह युवती? उफ! दर्द से दिमाग फटा जा रहा है। काश! राम भइया इस समय यहां होते।

जब काफी कोशिश करने के पश्चात् भी रहीम को दिमागी शान्ति नहीं मिली —
बस, नींद की यह दो गोलियां सुबह तक के लिए मुझे सारी दिमागी परेशानियों से मुक्ति दिला देंगी।
अब मैं आराम से सो सकूंगा!
और वास्तव में पुनः बिस्तर पर लेटते ही उसे गहरी नींद ने धर दबोचा।
परन्तु मध्य रात्रि को जैसे ही दीवार पर लगी घड़ी ने अपने कर्कश स्वर में बारह बजने की सूचना दी, रहीम की नींद अचानक ही टूट गई और वह पहले के समान ही परेशान हो उठा।
टन—टन—टन
ओफ्फ! अभी तो बारह ही बजे हैं। कम्बख्त उन दो गोलियों ने भी कोई प्रभावशाली काम नहीं किया। लगता है पूरी रात काटने के लिए दो गोलियां और लेनी पड़ेंगी।

लेकिन रहीम ने उठकर अभी मेज की दराज से नींद की गोलियों वाली शीशी निकाली ही थी कि उसे ऐसा लगा, जैसे कोई उसके कानों में फुसफुसा रहा हो।
भइया, क्या अपनी बहन से मिलने नहीं आओगे। मैं तुम्हारा ही इन्तजार कर रही हूं भइया। चले आओ।
ओह! कामनी!
चले आओ भइया, चले आओ। मुझे और दुःख मत दो। एक शताब्दी से मैं जिस आग में जल रही हूं, उसे केवल तुम ही बुझाकर मेरी आत्मा को शान्ति दे सकते हो।
नहीं-नहीं, मैं नहीं आ सकता। यदि मैं फिर तुमसे मिला तो पागल हो जाऊंगा।
परन्तु कामनी के बार-बार करुणा भरे ढंग से आग्रह करने पर —
उफ! मुझसे उसकी करुणाभरी पुकार अब सुनी नहीं जा रही है। उसकी पुकार मेरे कानों के पर्दे फाड़े दे रही है। मुझे जाना ही होगा!
चले आओ भइया, चले आओ!
मैं आ रहा हूं कामनी! मैं आ रहा हूं। तुम दुखी मत हो!

मले ही पल —
मैं सोच रहा हूं, देख रहा हूं, लेकिन फिर भी पता नहीं क्यों, काफी कोशिश करने के बावजूद भी वहां जाने से अपने आपको रोक नहीं पा रहा? ऐसा लग रहा है, जैसे कोई अदृश्य शक्ति मुझे जबरदस्ती हवेली की ओर खींचे लिये जा रही है।
कुछ ही देर बाद —
अरे, वह हवेली तो कल रात की तरह ही प्रकाशमान है और सही अवस्था में है! आखिर यह कैसा चमत्कार है?
ओह! द्वार तो बन्द है, जबकि कल रात खुला था और वह मूर्ति भी गायब है, जिसे मैंने सुबह ही यहां खड़े देखा था।
तभी —
आ... ई... ई... ई...!

त... तुम...!
हां, आखिर तुम मरने के लिये फिर यहां आ पहुंचे! हा... हा... हा...!
म... मुझे कामनी ने ही आज रात मिलने के लिये कहा था, लेकिन तुम कौन हो और यह सब क्या चक्कर है?
अभी बताता हूं। लो!
ठीक तभी हवेली के भीतर से किसी का तेज स्वर आया।
नहीं- नहीं कालमेघ! उसे मत मारना। वह कुन्दन है। उसे भीतर आने दो।
क्या कहा? छोटे सरकार!
यह तो कामनी की ही आवाज मालूम पड़ती है!
दूसरे ही पल--
मैं अपनी गुस्ताखी की क्षमा चाहता हूं छोटे सरकार! दरअसल मैं आपको पहचान नहीं पाया था। भीतर जाइये। कामनी बिटिया आपका ही इन्तजार कर रही हैं।
छोटे सरकार! उफ अब तो दिमाग बिल्कुल ही काम नहीं कर रहा!

क्या सोच रहे हैं छोटे सरकार? भीतर जाइये न!
लेकिन द्वार तो बन्द है!
दरवाजा खुल जायेगा छोटे सरकार! आप आगे तो बढ़िये।
असमंजस में पड़े रहीम ने जैसे ही दरवाजे की ओर कदम बढ़ाये, द्वार तेज आवाज करता हुआ खुल गया।
चर्र_चर्र_चर्र
फिर चमत्कार! द्वार अपने आप खुल गया! खोलने वाला कोई नहीं!
चले आओ भइया, मैं तुम्हारे ही आने का बेताबी से इन्तजार कर रही थी।
ओह! कामनी!
तभी सहसा कुछ ध्यान में आते ही रहीम ने तेजी से पलटकर द्वार की ओर देखा।
अरे! द्वार पुनः बन्द हो गया! कहीं मैं इस युवती के किसी षड्यन्त्र का शिकार होने तो नहीं जा रहा!
रुक क्यों गये भइया? यहां आओ!

तुमने मुझे यहां क्यों बुलाया है?
सिर्फ यह विश्वास दिलाने के लिये कि तुम मेरे भाई कुन्दन ही हो!
और मैं तुमसे कह चुका हूं कि मैं कुन्दन नहीं, बल्कि रहीम हूं और हम आपस में पहले कभी नहीं मिले।
मैं जानती हूं कि तुम्हारी अतीत की याददाश्त इस जन्म के पर्दे के पीछे छिप चुकी है और तुम्हें पिछले जन्म के बारे में कुछ भी मालूम नहीं है...
...परन्तु मुझे विश्वास है कि कुछ वस्तुएं देखकर तुम्हें पिछले जन्म की सारी बातें फिर याद आ जायेंगी। आओ, मेरे पीछे चले आओ!
यदि इस लड़की ने जल्दी ही मुझे सारा रहस्य नहीं बताया तो मैं निश्चित रूप से पागल हो जाऊंगा।
कामनी उसे लेकर एक सजे-सजाए कमरे में पहुंची तो रहीम की खोपड़ी आश्चर्य से फिर एक बार घूम गयी।
या खुदा, यह सब मैं क्या देख रहा हूं। सुबह तो यहां सिवाय मकड़ियों के जाले, ईंट-पत्थर और दुर्गन्ध के अलावा कुछ भी नहीं था!

इस बैठक को देखकर क्या तुम्हें कुछ याद आया?
नहीं, कुछ नहीं। सिवाय इसके कि सुबह मुझे यहां मकड़ियों के जालों और टूटी-फूटी दीवारों से निकल रही घास के कुछ भी दिखाई नहीं दिया था।
ही... ही... ही... बीते वक्त की तस्वीरें सवेरे नहीं, बल्कि रात में ही अच्छी तरह दिखाई देती हैं भइया। दिन के समय तो यहां सभी को वही दिखाई देगा, जो तुम देख चुके हो।
तुम्हारी उल्टी-सीधी कोई भी बात मेरे पल्ले नहीं पड़ रही। साफ-साफ बताओ कि माजरा क्या है, वरना...
...तुम मेरे हाथों नहीं बचोगी। इस रिवाल्वर में पूरी छः गोलियां हैं।
ना-ना मेरे अच्छे भइया! इस खिलौने को जेब में ही रखो। बगैर मेरी इच्छा के यह भी यहां आवाज नहीं कर सकता। विश्वास न हो तो चलाकर देख सकते हो।
तुम यूं नहीं मानने वाली। लो, मैं तुम्हारा किस्सा ही खत्म किये देता हूं।
पिट-पिट-पिट-
ही... ही... ही...!

आश्चर्य है! गोलियां तो इसमें पूरी भरी हैं, फिर यह चली क्यों नहीं?
अब तो तुम्हें विश्वास हो गया कि मैंने गलत नहीं कहा था। अब इसे जेब में रखो और मेरे साथ आओ। मैं तुम्हें दूसरे कमरे दिखाती हूं।
फिर कामनी रहीम को लेकर एक दूसरे कमरे में पहुंची।
यह मेरा शयनकक्ष है। आओ, अब तुम्हें तुम्हारा शयनकक्ष दिखाती हूं।
मैं कहता हूं आखिर यह क्या बकवास है। मैं यहां कमरे देखने नहीं, बल्कि यहां का सारा रहस्य जानने आया हूं।
धैर्य रखो भइया, शायद अपना कमरा देखकर तुम्हें सबकुछ याद आ जाये और मुझे कुछ बताने की जरूरत ही न पड़े।
उफ! तुम मुझे जरूर पागल बनाकर छोड़ोगी। चलो।
एक दूसरे कमरे में—
यह है तुम्हारा शयनकक्ष! इस कमरे को अच्छी तरह देखो और बताओ कि तुम्हें कुछ याद आ रहा है?
अच्छा है, लेकिन मैं तुम्हें पहले भी कह चुका हूं कि मैंने न केवल तुम्हें ही कल रात पहली बार देखा है, बल्कि यह हवेली और कमरा भी पहली बार देख रहा हूं। मुझे और ज्यादा मूर्ख न बनाकर अपना असली मकसद बयान करो।

क्या इस तस्वीर को देखकर भी तुम यही कहोगे। जरा इसे गौर से तो देखो!
अरे!
यह तो वास्तव में मेरी ही तस्वीर हैं, लेकिन यह पेन्टिंग यहां कैसे ? किसने बनाई है ?
पहले जरा इस दूसरी तस्वीर को देखो।
क्या तुम इन तस्वीरों को देखकर भी अब नहीं मानोगे कि तुम्हीं मेरे भाई कुन्दन हो...
ओह! इसमें तो मेरे साथ तुम भी हो!
...याद करो, एक शताब्दी पूर्व तुम, मैं और हमारे माता-पिता इसी हवेली में रहते थे और एक रात...।
नहीं-नहीं, मुझे कुछ याद नहीं आ रहा। मैं कुछ नहीं जानता। मैं सिर्फ इतना जानता हूं कि मैं रहीम हूं।

क्या तुम अपने माता-पिता को भी नहीं पहचानते। जरा इन तस्वीरों को गौर से देखो।
नहीं_नहीं_नहीं_ मैं कह चुका हूं कि मैं किसी को नहीं पहचानता ?
ओह! मेरी तमाम कोशिशें बेकार रहीं। अब मुझे अपना उद्देश्य पूरा करने के लिये कोई और ही उपाय करना होगा!
क्या सोच रही हो तुम ? जल्दी से मुझे इस हवेली से बाहर निकालो। अब मैं यहां एक सैकेण्ड भी नहीं रह सकता, मेरा दम घुट जायेगा यहां।
ठीक है, आओ मेरे साथ।
कामनी रहीम को न जाने किन-किन गुप्त मार्गों से लेकर आगे बढ़ती रही।
आखिर यह तुम मुझे कहां लिये जा रही हो ?
अभी मालूम हो जायेगा। चलते रहो।
रहीम ने लाख चेष्टा की कि वह कामनी के पीछे न जाये, लेकिन वह अपने कदमों पर अंकुश नहीं लगा पाया। इस समय उसकी अवस्था ऐसी ही थी, जैसी कोई अदृश्य शक्ति जबरदस्ती उसे आगे की ओर धकेल रही हो।

एक स्थान पर पहुंचकर कामनी ने
पर लगे एक बटन को दबाया।
घर्र-घर्र-घर्र
कोई गुप्त मार्ग मालूम देता है!
मेरे पीछे चले आओ भइया!
पता नहीं किस नर्क में लिये जा रही है। लेकिन चाहकर भी मैं इन्कार नहीं कर पा रहा हूं।
सीढ़ियों के समाप्त होने पर—
ओह! यह तो एक बड़ा तहखाना है! लेकिन यह मुझे यहां क्यों लेकर आई है और वह ताबूत कैसा है।
सहसा चारों तरफ का निरीक्षण करते-करते रहीम की दृष्टी ऊपर उठी।
नहीं... उफ!

डरो नहीं भइया। वह मेरा ही कंकाल है।
त... तुम्हारा? लेकिन तुम तो मेरे सामने जिन्दा खड़ी हो?
ही... ही... ही... जो तुम देख रहे हो, वह हकीकत नहीं है। मैं एक भटकती हुई रूह मात्र हूं! मैंने एक स्टूल के ऊपर चढ़कर स्वयं अपने हाथों से अपने गले में फांसी का फंदा डाला था। वर्षों बाद लाश सड़-गलकर अब केवल एक कंकाल के रूप में छत से झूलती हुई दिखाई दे रही है।
यह क्या बकवास है? मैं भूत-प्रेतों के अस्तित्व पर विश्वास नहीं करता। जरूर तुम हिप्नोटिज्म का सहारा लेकर मेरे ईर्द-गिर्द किसी षड्यंत्र का जाल बुन रही हो!
तुम्हारा यह भ्रम भी उस ताबूत में रखी अपनी लाश को देखकर दूर हो जायेगा भइया। तुम्हारी लाश सड़ी-गली नहीं है, क्योंकि मैंने आत्महत्या करने से पूर्व तुम्हारी लाश को विशेष रसायन लगाकर उस ताबूत में रख छोड़ा था।
म... म... मेरी लाश!
हां, ठहरो मैं दिखाती हूं।

लो देखो।
ओ नो!
निःसन्देह ताबूत में रखी उस जली हुई भयानक लाश की शक्ल-सूरत रहीम से काफी मिलती-जुलती थी।
यह तुम्हारी, यानी मेरे भाई कुन्दन की लाश है। क्या अब विश्वास हुआ?
मैं पूछता हूं आखिर यह किस्सा क्या है। तुम्हारा भाई आखिर मरा कैसे?
बताना बेकार है, क्योंकि मैं जानती हूं कि सारी बात सुनने के बाद भी तुम मेरी बातों पर विश्वास नहीं करोगे, इसलिये मैंने फैसला किया है कि अब मैं अपने भाई को ही जिन्दा कर उसके द्वारा अपने दुश्मनों से प्रतिशोध लूंगी!
क... क्या मतलब?
उत्तर में कामनी भयानक हंसी हंसी और तभी किसी विचित्र गंध के नथुने से टकराते ही अचानक रहीम को अपना मस्तिष्क घूमता हुआ-सा महसूस होने लगा।
ही...ही...ही...!
आह! मेरा मस्तिष्क सुन्न होता जा रहा है! यह अचानक क्या हुआ मुझे?

अगले ही पल रहीम चकराकर फर्श पर गिरा और बेहोशी के गहरे सागर में डूब गया।
मुझे दुख है भइया कि इतने वर्षों के बाद मिलने पर भी मुझे तुम्हारे साथ यह व्यवहार करना पड़ा, लेकिन तुम्हें भूतकाल में पहुंचाने के लिये मैं ऐसा करने पर मजबूर हो गई थी।
और अब दूर किसी घड़ियाल ने रात के दो बजाए तो हवेली का विशाल फाटक खुला और उसमें से एक दरम्याने कद का भयानक इंसान बाहर निकला...
...और तेजी से शहर की ओर दौड़ पड़ा।
वह इंसान और कोई नहीं, कामनी का भाई कुन्दन ही था।
लगभग आधा घण्टे बाद वह शहर की एक शानदार कोठी के सामने खड़ा था।
हुम्म! ठीक स्थान पर पहुंचा! यहीं रहता है मेरा पहला शिकार!
एक बार उसने कोठी की चारदीवारी और आस-पास का निरीक्षण किया और फिर—
चारदीवारी ऊंची जरूर है, लेकिन मेरे लिये नहीं!

ही पल वह कोठी की चारदीवारी लांघकर
लॉन में था।
चारों तरफ सन्नाटा है। केवल इसी कमरे में प्रकाश है और यहीं से कुछ लोगों के बातचीत करने की आवाज आ रही है। शायद वह शैतान रामलाल इसी कमरे में कुछ लोगों के साथ मौजूद है। मुझे अन्य लोगों के उसके पास से हट जाने तक इन्तजार करना होगा।
उसी प्रकाशमान कमरे के भीतर —
वाह भाई रामलाल! तुम वाकई दिलदार हो। तुम्हारी दावत का भी कोई जवाब नहीं। मजा आ गया!
मजा क्यों नहीं आयेगा भाई। कल रात ही इन्हें अपने जुआ घर से लाखों का फायदा हुआ है।
भाई, हम तो भगवान् से यही प्रार्थना करते हैं कि वह इन्हें छप्पर फाड़कर इसी तरह देता रहे और हम पर इनकी कृपा-दृष्टि हमेशा ऐसी ही बनी रहे।
अरे भाइयो, मुझे भगवान् की नहीं, बल्कि आप लोगों की कृपा-दृष्टि चाहिये। यदि आप लोगों की कृपा रही तो एक दिन लक्ष्मी भगवान् के कदम चूमने के बजाय हमारे कदम चूमेगी।
हा...हा...हा... वाह भाई, यह भी खूब कही।
कुछ देर बाद—
अच्छा भाई रामलाल! रात काफी हो गयी है। अब हमें आज्ञा दो।
हां भाई, वरना रास्ते में भौंकने वाले बहुत मिल जायेंगे।
अच्छा साथियो, कल की शुभ रात्रि मनाने के लिये आज गुड नाईट।
हा... हा... हा...!

मेहमान आ रहे हैं। बस कुछ क्षण और इंतजार करना है। उसके बाद मेरा यह गंडासा होगा और उस शैतान रामलाल की गर्दन!
रात काफी बीत चुकी है। अब मुझे भी सो जाना चाहिये। सुबह-सुबह ही मुझे बंदरगाह पहुंचना है। यदि मेरे माल वाला जहाज सही-सलामत तट पर पहुंच गया तो मेरे लाखों-करोड़ों के वारे-न्यारे हो जायेंगे।
तभी—
अरे, यह अचानक बिजली कैसे गुल हो गई?
उसी समय भड़ाक से खिड़की खुली और वहां एक भयानक चेहरा देखकर सेठ रामलाल की घिग्घी बंध गयी।
भड़..भड़ाक
अरे बापरे, भ... भूत!

हा...हा...हा...
अब तुम नहीं बचोगे
भैरों सिंह उर्फ सेठ रामलाल!
आज तुम्हें अपने पुराने पापों
की सजा मिलने के साथ साथ
मेरी बहन की आत्मा को भी
थोड़ी-सी शान्ति मिल जायेगी।
कर लो अपने शैतान की याद!
क...
कौन
हो तुम?
तुम्हारी
मौत!
आ...ई...ई...
गर्दन पर वार होने के साथ ही रामलाल की
हृदयविदारक चीख वातावरण में गूंज गई।
तेरह में से एक कुत्ता
अपने किये की सजा पा गया।
अब निकल चलूं और दूसरे
शिकार को देखूं!
तभी रामलाल की भयावनी चीख सुनकर उसकी
पत्नी, बच्चे और नौकर-चाकर आदि वहां पहुंचे।
स्वामी! न...हीं...हीं...
फिर जैसे ही उनकी नजर कुन्दन पर पड़ी-
वह रहा
हत्यारा! पकड़ो!

कुछ नौकरों ने दौड़कर कुन्दन को पकड़ना चाहा, लेकिन जैसे ही उन्होंने उसकी भयानक सूरत देखी—
अरे बाप रे!
भ... भूत!!
हा...हा...हा... भाग जाओ, वरना अपने मालिक की तरह तुम भी मारे जाओगे।
बदहवास हो नौकरों ने तुरन्त उसका मार्ग छोड़ दिया।
उफ! कितना भयानक इन्सान है!
मेरे विचार से हमें समय नष्ट न करके तुरन्त पुलिस को फोन करना चाहिए।
हां, चलो!
हैलो, पुलिस स्टेशन! कालगंज में एक अज्ञात हत्यारे ने सेठ रामलाल जी का खून कर दिया है।
क्या! ठहरो, हम अभी आते हैं। हां, लाश को कोई छुए नहीं।
जी बहुत अच्छा!
सेठ रामलाल शहर की मशहूर हस्ती थी, अतः पुलिस दल को उनकी कोठी में पहुंचने में ज्यादा देर नहीं लगी।
हाय, मैं लुट गयी! बरबाद हो गई। आग लगे उस खूनी को, जिसने मेरा घर उजाड़ा।
आप लोग जरा इस कमरे से बाहर हो जाइये और हमें व फोटोग्राफरों को अपना काम करने दीजिये

के बाहर जाने के बाद—
. नाथ, आप
के विभिन्न कोणों
फोटोग्राफ्स लीजिए।
थ ही हमारे द्वारा
ढूंढे गये निशानों के
फोटो लेने की कोशिश
कीजिये...
...उस खुली हुई खिड़की से विशेषकर।मुझे विश्वास है हत्यारा उसी खिड़की से कमरे के भीतर दाखिल हुआ होगा।
बेहतर है इंस्पेक्टर!
और हवलदार रामसिंह, तुम नौकरों और सेठजी के परिवार वालों से बयान लेकर यरलेस द्वारा हत्यारे का हुलिया कन्ट्रोलरूम को पित कर दो, ताकि तुरन्त ही चारों ओर उसकी खोजबीन आरम्भ हो जाए।
यस सर!
इधर पुलिस दल अपनी कार्यवाही करने में लगा हुआ था और उधर भयानक कुन्दन सेठ रामलाल की कोठी से लगभग एक किलोमीटर की दूरी पर उत्तर में स्थित एक आलीशान बंगले के सामने खड़ा अपने दूसरे शिकार की गंध सूंघ रहा था।
मि. जयचन्द आर्य।एम.पी.
बिल्कुल ठीक। यही है मेरा दूसरा शिकार! देश का पुराना गद्दार आज देशभक्त नेता बना बैठा है। आज इसकी सारी देश-भक्ति मेरे गंडासे के एक ही वार से खून की नदी में डूबकर हमेशा-हमेशा के लिये दम तोड़ देगी। हा...हा...हा...हा!
ही पल वह पिछवाड़े की दीवार फांदकर भीतर पहुंच गया।
दीदी ने बताया था कि यह शैतान अपने बंगले में बिल्कुल अकेला रहता है। अतः इससे निपटने में ज्यादा मुश्किल पेश नहीं आयेगी।

बंगले के भीतर प्रविष्ट हो कई कमरों को देखने और एक-दो गलियारों को पार करने के पश्चात कुन्दन एक कमरे के सामने आकर रुक गया। भीतर प्रकाश था और किसी के बातचीत करने का स्वर भी आ रहा था।
आवाजों से तो मालूम होता है कि भीतर केवल दो ही प्राणी हैं, जिनमें एक स्त्री है और दूसरा पुरुष! लेकिन मुझे यहां केवल एक ही पुरुष जयचन्द आर्य से मतलब है। की-होल से देखूं!
कुन्दन ने की-होल से भीतर झांका।
भीतर वास्तव में जयचन्द आर्य एक युवती के साथ मौजूद था।
तुम बहुत खूबसूरत हो रानी! आओ-आओ, हमारे करीब आओ। हम तुम्हारे सारे दुःख-दर्द दूर कर देंगे!
नहीं-नहीं, रात काफी हो चुकी है। अब मैं जाती हूं।
रात बीती जरूर है रानी, लेकिन अभी खत्म नहीं हुई है।
मेरी हालत पर तरस खाइये बाबूजी और मुझे जाने दीजिये। मां सख्त बीमार है। दरवाजा खोल दीजिये प्लीज!
हम अच्छी तरह जानते हैं रानी कि तुम्हारी मां सख्त बीमार है और उसके इलाज के लिये तुम्हें पैसा चाहिये, लेकिन पैसा तो तभी इकट्ठा कर सकती हो, जब तुम्हें नौकरी में तरक्की मिले, और यह तुम अच्छी तरह जानती हो कि यह तरक्की हम ही तुम्हें दे सकते हैं...
...इसीलिये तुम्हारी मजबूरी को देखते हुए हमने आज रात तुम्हें यहां बुलाया था। बस, तुम हमें थोड़ा-सा खुश कर दो।

आह! नहीं-नहीं! छोड़ो मुझे!
हा...हा...हा... बस करो, अब और नखरे मत दिखाओ रानी। चुपचाप जैसा मैं कहता हूं वैसा ही करो।
छोड़ दे मुझे नीच, कमीने, वरना मैं तेरा खून पी जाऊंगी।
वह हरामजादा आज फिर मेरे सामने अपनी पुरानी हरकत दोहरा रहा है। अब देर करना उचित नहीं।
अगले ही पल उसने एक भरपूर ठोकर बन्द दरवाजे पर मारी।
भड़ाक
जैसे ही कुन्दन दरवाजा तोड़कर भीतर प्रविष्ट हुआ, बिजली गुल हो गई।
आ... ई... ई...
अरे बाप रे, यह शैतान यहां कहां से आ मरा।
शैतान को सभी शैतान ही दिखाई देते हैं ठाकुर हरफूलसिंह उर्फ जयचन्द आर्य!

बहन, तुम्हें मुझसे डरने की कोई जरूरत नहीं। तुम यहां से जा सकती हो। हां, रास्ते में यदि कोई पब्लिक बूथ दिखाई पड़े तो पुलिस को यह सूचना अवश्य देना कि एक शैतान ने दूसरे शैतान एम.पी. जयचन्द की हत्या कर दी है।
ब... बहुत अच्छा भइया!
क... कौन हो तुम? और म... मुझसे... क्या चाहते हो?
सिर्फ तुम्हारे प्राण!
फिर इससे पहले कि जयचन्द अपना कोई बचाव कर पाता—
आह!
इसका भी किस्सा खत्म हुआ। अब कालिया की बारी है। दीदी ने कहा था कि उसका नया नाम रमेश वर्मा है और वह पुलिस सुपरिटेन्डेंट के पद पर आसीन है...
...हूं! पुलिस सुपरिटेन्डेंट! कानून का पुराना भक्षक आज कानून का रक्षक बना बैठा है!

जैसे ही कुन्दन बंगले से बाहर निकला,
घड़ियाल बज उठा!
...टन...टन
ओह! चार बज गये! थोड़ी देर में भोर का उजाला फैल जायेगा, और उजाले में मैं कुछ भी देख नहीं पाऊंगा। मेरी शक्ति क्षीण हो जायेगी! अतः मुझे वापस लौट चलना चाहिये!
बाकी का शिकार अब मैं कल रात ही करूंगा!
भोर का उजाला फैलने के साथ ही रहीम की
टूटी।
अरे! यह तो खण्डहर हवेली ही मालूम पड़ती है।
ओह, तो क्या मैं रातभर यहीं पड़ा रहा और वह लड़की कामनी... या खुदा! वह भयानक लाश। क्या वह कोई सपना था? नहीं-नहीं, वह सपना नहीं हो सकता। मैं यहां आया था। कामनी मुझसे मिली थी और वही मुझे अपने भाई की लाश के पास ले गई थी...
...फिर... फिर उसके बाद क्या हुआ? हां, ध्यान आया। किसी विचित्र गंध से मैं बेहोश हो गया था, लेकिन... लेकिन वह सबकुछ तो किसी तहखाने में घटा था, फिर मैं यहां कैसे? और वह तहखाना... कुछ ध्यान नहीं आ रहा कि वह कहां था!
उसके बाद रहीम ने उस तहखाने की तलाश में पूरा खण्डहर छान मारा, लेकिन वह तहखाना तो क्या, उसे वे मार्ग भी वहां कहीं नहीं मिले, जहां से कामनी उसे लेकर तहखाने तक पहुंची थी।
उफ! यह मैं किन भूत-प्रेतों के चक्कर में पड़ गया। दिन को खण्डहर दिखाई देनेवाली हवेली रात को एकदम सजीव हो उठती है...
...अब यहां समय गंवाना बेकार है, घर लौट चलूं।

- क्या राम की वापसी हुई?
- कामनी और उसके भाई कुन्दन का क्या रहस्य था? वह बार-बार रहीम को ही अपना भाई कुन्दन क्यों कह रही थी?
- सेठ रामलाल और जयचन्द का खून क्या वास्तव में रहीम ने ही किया था या कुन्दन ने?
- कामनी देश के नामी-ग्रामी आदमियों की हत्या क्यों करा रही थी?
- क्या कामनी वास्तव में ही एक भटकती हुई रूह थी या फिर उसका फैलाया हुआ कोई भयानक जाल?
- कामनी कई शताब्दियों की बात क्यों करती थी?
- उसके पिछले जन्म का क्या रहस्य था?
- क्या भयानक कुन्दन पुलिस सुपरिंटेंडेंट का खून कर सका?

इन सब प्रश्नों के उत्तर जानने के लिये मनोज चित्रकथा के आगामी अंक में पढ़ें—

आत्मा का प्रतिशोध